Impact Factor : 5.963 (IIJF) UGC NO.46953

Registration No. 1803/2008 ISSN :- 2319-6297

The Original Source

Journal for All Research

An Interdisciplinary Quarterly Research Peer Reviewed Journal

Editor in Chief
Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastav
Dr. B.K. Srivastav

Founder
Late Prof. S.N. Sinha
Eminent Historian & Former HOD
Dept. of History
Jammia Millia Islamia, New Delhi

Volume 7 **No. -23** **(July-September, 2023)**

Published by
Centre for Historical and Cultural Studies & Research
Varanasi (U.P.) India

28.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य की अवधारणा और स्वरूप डॉ0 भारती तिवारी	.....	98-101
29.	A Qualitative Analysis On Literature Reviews Framing Rakesh Kumar Upadhyay[1], Prof. VD Sharma	.....	102-108
30	Soft Power Projection : Cultural and Spiritual Influences in India's Global Engagement Nandan Kumar	.....	109-115
31	Republics of Ancient India Prof. Sanjeev Kumar Tiwari Dr. Kaushalendra Singh	.....	116-125 126-127
32	हिन्दी उपन्यासों में संवेदना नागेश्वर शुक्ल		
33	Odisha Tribal Jewellery in Impact on Modern Fashion Dr. Somburu Sovara	.....	128-136
34	ANXIETY AMONG TRADITIONAL AND MODERN SCHOOL STUDENTS Manish Kaushal Prof. Udayan Misra	....	137-142
35	Rise and Types of Novels KUNAL DUHAN	....	143-146
36	बौद्ध दर्शन एवं पर्यावरण यादवेन्द्र कुमार तिवारी	.....	147-154
37	A Sociological Analysis of Influence of Parental Education on Intergenerational Social Mobility Abhishek Gaurav **Prof. Arvind Kumar Joshi	....	155-158
38.	"राष्ट्रभाषा हिन्दी और संतराम बी0ए0" बलिराम, डॉ0 सुरेन्द्र प्रताप सिंह,	.....	159-161
39	समकालीन हिंदी कविता की भाषा और सामाजिक सरोकार डॉ. प्रीति सिंह सच्चिदानन्द मिश्र	....	162-166

Impact Factor : 5.963 (IIJF) ISSN :- 2319-6297

समकालीन हिंदी कविता की भाषा और सामाजिक सरोकार

डॉ. प्रीति सिंह*
सच्चिदानन्द मिश्र**

आलेख

समकालीन हिन्दी कविता की भाषा समकालीन परिवेश और रचनाकार के सम्बन्धों को पुनः परिभाषित करती है। आज के विषमतापूर्ण समाज में जहाँ नैतिक मूल्य पतनोन्मुख हो रहे हैं, जहाँ मनुष्य के शोषण और उत्पीड़न का अन्तहीन सिलसिला है, जहाँ वर्गों के बीच विद्यमान सामाजिक-आर्थिक खाई बढ़ती जा रही है, जातिवाद और साम्प्रादायिकता में उत्तरोत्तर वृद्धि को प्रोत्साहन मिल रहा है, समाज में अलगाववादी प्रवृत्तियों को संपोषित किया जा रहा है। ऐसी स्थिति मे जनसामान्य की भाषा को कविता में स्थान मिलना स्वाभाविक है । क्योंकि कविता सुन्दर एवं महान विचारों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं हैं। वह एक तरह की 'अग्नि' है जो रचनाकार और समाज के मध्य के सम्बन्ध को निरन्तर ऊर्जा प्रदान करते हुए जीवन्त बनाये रखती है। तत्कालीन स्थितियों को देखकर कवि ऐसी भाषा में अपने विचार रखता है जो जीवन की निरन्तरता से सीधा साक्षात्कार करने पर ही प्राप्त होती है। भाषा का ऐसा प्रयोग करते हुए रचनाकार अपने समय के सामाजिक सरोकारों को स्पष्ट रूप से सामने लाता है। यहां यह बात ध्यान देने लायक है कि समकालीन कविता की शब्द सम्पदा अथवा भाषा का मुहावरा जितना विस्तार प्राप्त कर सका है, उतना इसके पहले आधुनिक कविता में कभी नहीं था। समकालीन कवि जनसामान्य से बातचीत करता है उनके संघर्षों को परखता है और उस संघर्ष को अपनी भाषा में व्यक्त करता है। इस क्रम में भाषा का सरलीकृत होना स्वाभाविक है। इस दृष्टि से समकालीन कविता की भाषा का रोचक होना भी स्वाभाविक है।

भाषा एक सामाजिक इकाई है। इस बात का समकालीन कविता में ठोस प्रमाण मिलता है। समकालीन कविता की भाषा शब्द समूह मात्र नहीं है, वह चीजों को उनके सन्दर्भों में सही ढंग से रखने का एक सर्जनात्मक प्रयत्न है। कई बार ऐसा भी होता है कि शब्द किसी जीवन खण्ड से उठा लिये जाते हैं परन्तु उनके संयोजन में कहीं न कहीं कमी रह जाती है और दृश्य उभर नहीं पाता। किंतु समकलीन कविताओं में रोजमर्रा के दृश्य लगभग उसी रूप में आते हैं, जैसे वे वास्तविक रूप में हैं, उनके भीतर से समग्र आशय ध्वनित होता है, क्योंकि ये मानवीय चिन्ताएं कल्पित नहीं है और न ही किसी दूसरे लोक की हैं, जीवन के भीतर से इन्हें प्राप्त किया गया है। सम्भवतः इसीलिये समकालीन कवि अपनी भाषा में गाँव, कस्बे, महानगर, खेत-खलिहान, फैक्टरी, दुकान सभी को समेटता चलता है। सामाजिक एवं जीवन यथार्थ का विस्तार बताते हुए भाषा का यह खुलापन समकालीनता को नयी सम्भावनाएं देता है और व्यर्थ के आभिजात्य को एक झटके से अलग कर देता है।

समकालीन कविता की सहज सम्प्रेषणीयता का कारण भाषा की सादगी है। पूर्ववर्ती युग की कविता सपाटबयानी और वक्तृता का पर्याय थी जो अधिक मार्मिकता प्राप्त करने पर जटिल एवं दूभर हो जाती थी । समकालीन कविता का आदर्श भले ही बोलचाल की भाषा रही हो, परन्तु कई स्थानों पर अनुभूतियों के एकान्त अपरिचित प्रतीकीकरण एवं शैली की वक्रता ने उसे जटिल बना दिया था। कुल मिलाकर अगर भाषा सहज हुई. तब भी उसकी सहजता दिखावटी ही रह गयीं, क्योंकि वह भीतर से सहज नहीं थी। धूमिल एवं उनके समय के लोकधर्मी

* **सहायक प्रोफ़ेसर (हिंदी विभाग), हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, धौलाधार परिसर 1, जिला- कांगड़ा**
****शोधार्थी (हिंदी विभाग), हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, धौलाधार परिसर 1, जिला- कांगड़ा, हिमाचल– 176215**